Table -2(A): Showing between Non-working & Working women on Stress Score

Compared SS	Means	SDs	N	't' ratio	P Value
Non-working women	15.23	3.92	100	5.49	<.01
Working women	18.67	4.89	100		

The obtained mean of non-working women is 21.47 and working women 19.57 which is lower than working women on mental health score obtained t-ratio is 2.08 which is significant on df=198 at .01 level of confidence. Here low score indicates better mental health which is present in Table-1.

Obtained mean of non-working women is 15.23 and working women is 18.67 on stress score. Obtained t-ratio is 5.49 on stress score which is highly significant on df=198 at .01 level of confidence.

Conclusion :- The result is quite expected direction because it is natural and verify the hypothesis on mental health and stress score. Thus all kind of common psychological stressors are associated with high physical changes and these in turn have resulted many physical disorders. Salovey et al (2000) Postonjee (1987) said that stress in the light of primary and secondary social system. We can say that problem of mental health and stress in women is an important aspect of the process of social change in India.

REFERENCES

- Brown, R.A. (1977) : Creativity, discovery and science, Journal of Chemical Education (5), pp. 720-724.
- Kumar Pramod (1992) : Mental Health & Checklist.
- Singh, Arun Kumar (2004) : Singh's Personal Stress Source Inventory, National Psychological Corporation, Agra.
- Thavakan, P.N.O. (1992): Occupational Stress and Job Satisfaction among Working Women, Journal of the Indian Academy of Applied Psy. 18(1-2), 37-40.
- Salovey et al (2000): Emotional Status and Physical Health, American Psychologists, 55, 110-121.

******

19वीं शती में मुस्लिम धार्मिक चेतना

डॉ. कृष्ण अली अलवर्ट*

19वीं शती का काल मुस्लिम समाज के लिए उत्साहवर्धक नहीं था। वस्तुतः मुगल साम्राज्य के विघटन के पश्चात् देश की राजनीतिक एकता छिन्न–भिन्न हो गई और केंद्रीय शक्ति के अभाव में बहुत से स्थानीय शासक उत्पन्न हो गए। मुगल साम्राज्य के पराभव के पश्चात् मराठों तथा राजपूतों के सशक्त राज्य अस्तित्व में आने लगे। लेकिन इसी समय 18 वीं शती के प्रारंभ में यूरोप निवासियों का पूर्वी एशिया के देशों में व्यापार के लिए पर्दापण हुआ। अंग्रेजों ने क्रमशः भारत से अन्य यूरोपीय जातियों को निकाल दिया और स्वयं यहां के भू–स्वामी बन गए। 19वीं शती के पूर्वार्द्ध का राजनीतिक इतिहास ईस्ट इंडिया के विस्तार तथा इंग्लैंड द्वारा भारतीय देश के शासन का इतिहास है। राजनीतिक .ष्टि से एक के बाद दूसरे मुसलमानी राज्य कंपनी द्वारा समाप्त कर दिए गए। सन् 1843 और में सिंध, सन् 1856 में अवध तथा 1857 में मुगल साम्राज्य के अंतिम प्रतिनिधि बहादुर शाह के प्रभुत्व की समाप्ति कर दी गई। उत्तर भारत जिसने निकट में मुगलों का शौर्य देखा था, इस समय तक अंग्रेजी भारत के अंतर्गत आ चुका था। ऐसी स्थिति में मुसलमान समाज और धर्म के लिए संकट का होना स्वाभाविक ही था।

सन् 1857 इस्वी की घटना ने मुसलमान समाज में और भी संकट की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। इस विद्रोह में मुसलमानों ने खुलकर भाग लिया, प्रायः उत्तर भारत में प्रत्येक प्रतिष्ठित मुसलमान परिवार की सहानुभूति विद्रोहियों के साथ थी। उनका विश्वास रहा कि बहादुर शाह के नेतृत्व में अंग्रेजों के स्थान पर फिर मुगल राज्य की स्थापना हो सकेगी लेकिन जब यह विद्रोह दबा दिया गया तो उनकी सारी आशाएं धूल में मिल गई। इसके अलावा, अंग्रेज अधिकारियों के दमन चक्र में मुसलमानों को ही अपना लक्ष्य बनाया गया। हजारों की संख्या में उन्हें फांसी दी गई, उनकी संपत्ति जब्त कर ली गई और उन्हें प्रशासनिक पदों से अलग कर दिया गया। उनकी दुर्दशा का विसरण हमें तत्कालीन लेखकों– मिर्जा गालिब, बहादुर शाह जफर और सर सैयद अहमद की रचनाओं में दिखलाई पड़ता है। सारांशतः 19वीं शती के उत्तरार्ध में मुसलमान समाज बड़ी ही निराशा और घुटन की स्थिति में था कोमा बहुत कुछ अंशों में समाज के लिए अस्तित्व का प्रश्न ही

*मठिया मोहल्ला बक्सर, बिहार

उठ खड़ा हुआ था।[1]

बहावी आंदोलन इस्लाम धर्म का निर्देश कुरान में किया गया है। यह आवश्यक है कि धर्मानुयायी उसका अक्षरशः पालन करें। संप्रदाय के आरंभ में तो यह अनुभव ठीक रहता है, लेकिन क्रमशः समय के बीतने पर धार्मिक सिद्धांतों, रीति–रिवाजों और मान्यताओं पर व्याख्याएं आरंभ हो जाती हैं जिसका परिणाम यह होता है कि बहुत सी बातें मूल धर्म में जुड़ जाया करती हैं। प्रायः सभी धर्म इस प्रक्रिया से प्रभावित हुए हैं, इस्लाम इसका अपवाद नहीं था।

16वीं शती में इस्लामी जनता अपने मूल धर्म से अलग होकर अनेक रूढ़ियों और ब्रह्म चारों से प्रभावित हो रही थी। इस्लाम धर्म की व्याख्या में ऐसी बातों का समावेश हो गया था जो बाद में धर्म के साथ जुड़ गया था। ऐसी स्थिति में, अरब देश में धार्मिक मान्यताओं के परिशोधन के लिए एक आंदोलन का जन्म हुआ। यह धार्मिक आंदोलन बहावी आंदोलन के नाम से जाना जाता है।

बहावी आंदोलन के जन्मदाता मोहम्मद इब्न अब्दुल बहाव थे। इनका जन्म सन् 1700 ईस्वी के लगभग अरब के नज्द के प्रांत में हुआ था। बहाव् साहब धार्मिक प्रवृत्ति के थे उन्होंने इस्लाम के प्रमुख तीर्थ मक्का और मदीने की यात्रा की तथा धर्म के मौलिक साहित्य का गहन और सूक्ष्म अध्ययन किया। इस्लामी धार्मिक साहित्य के अध्ययन के परिणाम स्वरूप उनके मन में वर्तमान अंधविश्वासों, कुरीतियों और आडम्बरो के प्रति रोष उत्पन्न हो गया, और उन्होंने इस इन सब का विरोध करने का निश्चय कर लिया।

भारत में बहावी आंदोलन :–प्रति वर्ष में बहुत बड़ी संख्या में भारतीय मुसलमान अरब हज करने जाया करते थे। इन्हीं तीर्थ यात्रियों के माध्यम से बहावी विचार भारत में पनप सके थे। यह तो ऐतिहासिक सत्य है कि भारत में इस्लाम में दीक्षित होने वाले लोगों में अधिकांश हिंदू ही थे। यह लोग अपने साथ हिंदू धर्म की बहुत सी बातें भी ले गए ले आये। इस दृष्टि से पीरों तथा फकीरों की कब्रों की तड़क–भड़क के साथ पूजा, ग्राम देवताओं की पूजा, जाति प्रथा तथा जीवन यापन में कई विधियां जैसे चूड़ी पहनना, सिंदूर लगाना आदि को गिनाया जा सकता है। साधारणतया मुसलमान समाज भारत में उसी वातावरण तथा रस्मो रिवाज के दायरे में ही रहता था जिसमें कि उसके पड़ोसी हिंदू रहा करते थे। इसलिए धार्मिक अथवा सामाजिक स्तर पर आदान–प्रदान होने होना कोई आश्चर्य की बात नहीं कही जा सकती थी। लेकिन ये बाते कतिपय कट्टर इस्लामियों को नापसंद थी, ऐसे ही लोगों के द्वारा भारत में धार्मिक आंदोलन प्रारंभ किया गया था।

भारत में बहावी आंदोलन के सबसे प्रसिद्ध नेता सैयद अहमद बरेलवी हुए। सन् 1822 में उन्होंने मक्का की तीर्थ यात्रा की और वहीं वे वहाबियों के संपर्क

में आये। भारत लौटने पर उन्होंने सारे देश की यात्रा की और घूम–घूम कर मुसलमानों को समझाया कि इस्लाम में कितनी बेकार की बातें आ गई हैं, जिनका उल्लेख कुरान और हदीस में नहीं है, अतः इनको छोड़कर ही नेक मुसलमान का लाया जा सकता है। बरेलवी के विचार से विलासिता इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध है और यूरोप की जातियां इस्लाम से शत्रुता रखती हैं। उनके भाषणों में इस्लाम के पवित्र रूप का विवेचन रहता था, अंतः शीघ्र ही जनता में लोकप्रिय हो गये। सैयद अहमद का दृष्टिकोण संकुचित होने के कारण उन्होंने सामयिक स्थिति का अंदाजा नहीं किया और यह ऐलान किया कि चूँकि भारत पर मुसलमानों का राज्य नहीं है, इसलिए यह देश–दारुल–हरब हो गया है और यहां के मुसलमानों को जिहाद का धर्म सिद्ध अधिकार है। दूसरे शब्दों में धर्म को उन्होंने राजनीति के आवरण में लाने का यत्न किया जिससे अंग्रेज शासकों को उन पर संदेह होने लगा। बहावी आंदोलन का जोर क्रमशः कम होता गया और 19वीं शती के आखिर में इसके प्रचारकों की संख्या बहुत थोड़ी रह गई थी। बहावियों की सबसे बड़ी उपलब्धि देवबंद में सन् 1866 ईस्वी में स्थापित दार–ल–उल्म नामक संस्था है। जहां बहावी विचारधारा का प्रचार निर्बाध गति से बहुत दिनों तक चलता रहा।

अन्य गतिविधियां –धार्मिक नावोत्थान की दृष्टि से मुसलमान समाज में सर सैयद अहमद का नाम आदर से लिया जाएगा। उनका जन्म दिल्ली में सन् 1870 ईस्वी में हुआ था। सर सैयद का विशेष योगदान मुसलमानी समाज के उत्थान में है शिक्षा और समाज सेवा उनके कार्य क्षेत्र से। सर सैयद के सहयोगी ने मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली का नाम लिया जा सकता है। हाल फारसी तथा उर्दू के विद्वान थे और उनकी कविताओं का संग्रह "मुसद्दस" नामक ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हुआ। इस काव्य संग्रह में जागृत इस्लाम का समर्थ वर्णन किया है। हाली ने मुसलमानों को उनके पुराने गौरव का स्मरण दिलाया। दिनकर के शब्दों में नवोत्थान के काल में मौलाना हाली पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने मुसलमानों को अपने इतिहास की याद दिलाई और बदली हुई परिस्थिति में भी उनका मस्तक उठा कर चलने की प्रेरणा दी।[2]

संदर्भ ग्रेथों की सूचीः–

1 लाला लाजपत राय "हिस्ट्री ऑफ आर्य समाज" – पृष्ठ 83–87
2 दिनकर संस्कृति के चार अध्याय पृष्ठ 692

*****